तिब्बत-वृत्तान्त ।

अनेक भाषाओंकी अनेक पुस्तकों, सामयिक पत्रों
और मित्रोंको सहायता से
काशीनिवासी

बाबू गंगाप्रसाद गुप्तने लिखा ।

जिसे भारतजीवनके अध्यक्ष बाबू रामकृष्णवर्म्मा ने
अपने खर्च से छपवाकर प्रकाशित किया ।

॥ बनारस ॥
भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।

१९०५ ई० ।



तिबत-वृत्तान्त।

सीमा परिमाण इत्यादि।

तिबत जो आधे भारतवर्षके बराबर है और जिसमें ८ लाख मील चौरस भूमि है भारतवर्षके उत्तर ओर स्थित है। यह पहाड़ी देश क्विनलिन और हिमालय पर्व्वतके बीचमें है। तिबतवाले इसे बुद्धका देश कहते हैं। यह देश ऊँचाईमें संसार भरके देशोंसे ऊँचा है। समुद्रतलसे यह प्रायः तीन सौ मीलकी ऊँचाई पर स्थित है। इस देशके निवासियोंका वृत्तान्त, उनका धर्म्मविश्वास, उनकी रीति नीत, वहांका जलवायु और अन्यान्य बातें बड़ीही मनोरञ्जक और विस्मयजनक हैं।

तिबतके दक्षिण ओर आकाशभेदी हिमालय पर्व्वत खड़ा खड़ा अपना गौरव प्रकट कर रहा है; पश्चिम ओर कई ऊँचे ऊँचे पहाड़ी दर्रे हैं। इन दर्रोंमें कहीं बस्ती नहीं है; किन्तु ये बहुतही हरे भरे और चित्ताकर्षक हैं। इन्हीं दर्रोंमें होकर पञ्जाबकी नदियां बहती हुई पहाड़के नीचे पहुँचती हैं। किसी किसी दर्रेसे होकर जिसकी ऊँचाई १६ हजार फीट है हिन्दुस्थानके यात्री तिबतको जाते

हैं। इस देशके उस भागको जो इण्डस नदीके निकटवर्त्ती स्थानोंमें फैला हुआ है लदाख कहते हैं। यह स्थान हिमालयके उत्तर ओर है। लदाखकी उत्तरी सीमापर काराकोरम पर्व्वत है; किन्तु वास्तवमें क्विनलिन पर्व्वतही तिब्बत की उत्तरी सीमापर अवस्थित है। क्विनलिन पर्व्वत पूर्ण पहाड़ी दीवार है जिसकी चौड़ाई १०० से १५० मील तक है। इसके शिखर १८ से २५ हजार फीटतक ऊँचे हैं और दर्रे जो रास्तेका काम देते हैं और जिनमेंसे होकर व्यापारी आते जाते हैं—१३ से १८ हजार फीटतक ऊँचे हैं। यह पहाड़ी दीवार एकसे दूसरे सिरेतक बर्फसे ढँकी रहती है। पूर्व और दक्षिणपूर्व ओर ऊँची ऊँची पर्वतमालाएँ चली गई हैं जो तिब्बतको चीन और ब्रह्मदेशसे पृथक् करती हैं।

यह देश ऊँचा नीचा और असम है। इसमें कई पहाड़ हैं जो पश्चिमी सीमासे पूर्वीय सीमातक पहुँचकर एक दूसरे से मिल गये हैं। दक्षिण ओरकी ऊँचाई १३ हजार पांच सौ फीट है; किन्तु कहीं कहीं १६ हजार फीट तक भी है। यह स्थान उत्तर और पूर्व ओर ढालुआं होता चला गया है। इधर इण्डस और ब्रह्मपुत्रकी तराइयां हैं, उधर पूर्व ओर उन चीनी नदियोंकी घाटियां हैं जो तिब्बतसे निकली हैं।

तिबतकी नदियां ।

तिबतकी दो बड़ी प्रसिद्ध नदियां सांपू और इण्डस हैं। सांपूका दूसरा नाम ब्रह्मपुत्र भी है। इण्डस सतलज और ब्रह्मपुत्र—ये तीनों नदियां कैलास पर्वतके पश्चिमी दक्षिणी और पूर्वी भागोंसे निकली हैं। जिस प्रकार गङ्गाजीके लिये यह बात प्रसिद्ध है कि उनका जल गौमुखसे निकलता है उसी प्रकार ब्रह्मपुत्र और सतलजके विषयमें भी ऐसा कहा जाता है कि ब्रह्मपुत्रका जल सिंहमुखसे और सतलजका मच्छमुखसे प्रवाहित होता है।

इण्डसका उत्पत्तिस्थान १६ हजार फीट या तीन मील की ऊँचाई पर है। वह लदाखसे होकर उत्तर और पश्चिम ओरको हर हर करती बड़े वेगसे बहती हुई चली जाती है और उसमें बड़े बड़े तरङ्ग उठते हैं। शरदऋतुमें रात्रि समय इण्डसका पानी बहुत घट जाता है किन्तु दिनमें इतनी चढ़ आता है कि पार उतरना असम्भव हो जाता है।

ब्रह्मपुत्रका उत्पत्तिस्थान कैलास पर्वतकी पूर्व दिशामें है जहांसे निकलकर वह दक्षिण और पूर्व ओर होती हुई तिबतकी राजधानी लासाके निकटसे बहती है।

तिबतमें नदियोंको प्रायः रस्सोंके पुलोंके द्वारा पार किया जाता है। नदी पार उतरनेवाला आदमी झूलता और इधर उधर झटके खाता हुआ चला जाता है। पुलकी

रस्सियां सनोवरकी डालियोंको बटकर बनाई जाती हैं और उनमें पांच पांच फीटके अन्तरपर गाँठें लगी रहती हैं । पुलकी तीन रस्सियां होती हैं जिनमें बीचवाली रस्सीकी अपेक्षा दोनों ओरकी रस्सियां कुछ पतली होती हैं । इन रस्सियों के ऊपर रस्सियोंहीकी बनी पटलियां बिछाई जाती हैं ।

कभी कभी तिब्बतवाले नदियोंको भैंसकी खालके द्वारा भी पार करते हैं । खालको सीकर उसमें फूंक भरी जाती है । उसके पैर ऊपरकी ओर रहते हैं । मल्लाह पीछे की तरफ पानीमें पैर लटकाकर बैठता है और जिस तरह कोई पैराक तैरनेके समय अपने पांवोंको फेंकता रहता है उसी तरहसे वह मल्लाह भी अपने पैर पानीमें लटकाकर फेंकता जाता है जिससे वह फूंक भरी खाल आगे बढ़ती जाती है । धनवान लोग दो फूंक भरी खालोंको एक साथही बँधवाकर उसपर बिस्तर बिछवा देते हैं और उसी पर बैठकर आरामसे नदीपार उतरते हैं ।

तिब्बतकी झीलें ।

तिब्बतमें असंख्य झीलें या सरोवर हैं । उनमें किसीका जल मीठा और किसीका खारा है । सबसे प्रसिद्ध झील 'मानस सरोवर' है । वह चीनी तिब्बतके दक्षिण पश्चिम ओर (कैलास पर्वतके निकट) अवस्थित है । वायुपुराणमें लिखा है कि जब पर्वत पर जल गिरा तो उसके चार भाग

होकर उसकी चार नदियां बन गईं जो नीचे उतरतेही चार सरोवरोंके रूपमें परिणत हुईं ।—अरुणोदक सरोवर पूर्व ओर, शीतोदक पश्चिम ओर, महाभद्र उत्तर ओर और मानस सरोवर उक्त पर्वतकी दक्षिण ओर हुआ । मानस सरोवरके पश्चिम ओर रावणभद्रा नामक एक झील है। सतलज नदी इसी झीलसे निकली है।

पाल्टी झील । यह एक गोलाकार बहुत बड़ी झील है। इसके एक ओर सांपो और दूसरी ओर भूटान देश है। इसके मध्यमें एक बड़ा टापू भी है।

टिङ्गरी नूर ।—'नूर' तिब्बती भाषामें झीलको कहते हैं; अतएव टिङ्गरी नूरका अर्थ 'टिङ्गरी झील' हुआ। इस झीलको 'आकाश-सरोवर' भी कहते हैं। यह भी एक बड़ी झील सांपूके उस पार और 'पाल्टी' के उत्तर ओर है।

कोकोनूर । -इसका दूसरा नाम 'नीलसरोवर' है। चीनी तिब्बतके दक्षिण पूर्व ओर समुद्रसे साढ़े दस हजार फीटकी ऊँचाई पर यह झील अवस्थित है । इसका आकार अण्डवत् है और घेरा प्रायः २५० मीलका । इसका जल बहुतही खारा अपेय और नीलवर्ण है। इसके चारों ओर मस्तक उन्नत किये हुए बर्फीले पहाड़ खड़े हैं जिनसे इसकी शोभा और भी बढ़ गई है। इस झीलमें मछलियां बहुत हैं। शरद ऋतुमें अधिक ठण्डकके कारण इस झील का पानी जमा रहता है।

झीलके पश्चिमी भागमें दक्षिणी तटसे प्राय: १४ मीलके अन्तर पर एक टापू है जिसका क्षेत्रफल सात मील है। टापूमें एक छोटासा मन्दिर बना हुआ हैं, जिसमें दस लामा निवास करते हैं। गर्मीके दिनोंमें कोई मनुष्य उस मन्दिर तक नहीं जा सकता क्योंकि वहां कोई नाव नहीं है न वहांके लोग नाव बनाना जानते हैं। शरद ऋतुमें जब झीलका पानी जम जाता है तब यात्री बर्फ परसे होकर उस मन्दिर तक जाते हैं। वे अपने साथ मार्गमें खानेके लिये मक्खन और जौका आटा ले जाते हैं।

तिब्बतके खण्ड ।

"तिब्बत खास"—इस खण्डसे चीनको राजस्व मिलता है। इसमें कई प्रदेश हैं, जो बड़े बड़े हैं। लदाखका क्षेत्रफल जिसे कभी कभी मध्य तिब्बत भी कहते हैं तीस सहस्र वर्गमील है। इनके सिवा 'छोटा तिब्बत' भी एक खण्ड है। उसका वृत्तान्त आगे चलकर किसी अवसर पर लिखा जायगा।

जलवायु ।

तिब्बतका जलवायु बहुतही ठण्डा और शुष्क है। शरद ऋतुमें वहां भयानक सर्दी बोध होती है। उस समय समस्त हिमालय पर्वत बर्फसे ढँक जाता है।

तिब्बतमें लकड़ी गलती या सड़ती नहीं, किन्तु उसके टुकड़े हो जाते हैं। वहांका जो व्यक्ति भेड़की खालके वस्त्र पहनता है वह यदि किसी ऐसी चीजके निकट जाता है जिसमें गर्मी पहुँचानेवाली शक्ति रहती है तो उसके वस्त्रोंसे चिनगारियां निकलने लगती हैं। पहाड़की चट्टानें सर्दीके दिनोंमें टूट फूटकर चूर्ण बन जाती हैं और वह चूर्ण सूखी मिट्टीमें मिल जाता है। जब हवा जोरसे चलने लगती है तब गर्द और रेतका एक बादलसा छा जाता है।

तिब्बतकी उत्पत्ति।

(खनिज) तिब्बतकी भूमिमें सोना, चाँदी, तांबा और टिन अधिकतासे पाया जाता है; किन्तु तिब्बतवाले इन धातुओंसे स्वयं कोई काम नहीं लेते। चीनके लोग तिब्बती खानियोंसे सोना निकालते हैं, पर उससे दूसरोंको लाभ नहीं उठाने देते। तिब्बतमें नमक, गन्धक और शोरा भी बहुत उत्पन्न होता है।

(उद्भिज) तिब्बतके उत्तरी और पश्चिमी भागोंमें जो अधिक ऊँचे हैं एक भी पेड़ नहीं है। हां उधर घासके मैदान अवश्य हैं जहां जानवर घूमा करते हैं। किन्तु दक्षिणी भागमें भेड़ बकरियों और जङ्गली लोगोंके खानेकी चीजें अधिकतासे उत्पन्न होती हैं। सांपू और ब्रह्मपुत्रकी

घाटियोंमें खेती भी होती है। अनाजमें केवल 'जौ' होता है। उधर पहाड़ियोंके किनारे किनारे तरकारियों और फलोंकी भी खेती होती है।

तिब्बतके जानवर।

तिब्बतका सबसे प्रसिद्ध जन्तु 'बाग' है। यह एक प्रकार का बैल है और बैलोंकी तरह डकारता और गरजता भी है। यह अत्यन्त सुन्दर और गर्वीला जानवर होता है। इसकी ऊँचाई विशेषतो गायके बराबर होती है; किन्तु अपने मोटे और मुड़े हुए सींगोंके कारण यह डीलडौलमें बहुत बड़ा मालूम पड़ता है। इसके ललाट पर लटकते हुए घने बाल होते हैं। आँखें इसकी लाल और चमकीली होती हैं। इसकी दुम भी बहुत लम्बी घनी और घुँघराली होती है और इसके सारे शरीर पर घने तथा लम्बे बाल रहते हैं।

बागका रङ्ग साधारणतः साँवला होता है, किन्तु उसकी पूँछ सफेद रङ्गकी होती है। यह जानवर केवल उन स्थानों में पैदा हो सकता है जो समुद्रतलसे बारह हजार फीटकी ऊँचाई पर होते हैं। बाग बड़ा दुष्ट जानवर होता है। बहुत दिनोंतक पालनेके बाद उसकी दुष्टता दूर होती है; फिर भी बिना नाथ * के वह शान्त नहीं रहता। उसे हल

* वह रस्सी जो नथुनोंमें डाली जाती है।

जोतनेके काममें कोई नहीं ला सकता; तौभी वह बोझ ढोनेके काममें लाया जाता है। लदाखवाले उसकी पीठपर व्यापारकी वस्तुएँ लादकर ले जाते हैं। यद्यपि उसके पैर बहुतही छोटे होते हैं तौभी वह चलनेमें ऐसा तेज होता है कि जिन मार्गोंमें एक मोटी बकरी भी कठिनतासे आ जा सकती होगी उधरसे वह बोझोंसे लदा होनेपर भी बहुत सुगमतासे खटखट करता हुआ चला जाता है। 'याग' में एक यह भी विशेषता है कि वह ऊँटको तरह हर चीज खा लेता है किन्तु अपने सवारके साथ बहुत बद-माशी करता है बल्कि उछलता कूदता पैर फेंकता और दौड़ता है।

यागकी दुमके बाल प्रायः चमर बनानेके काममें लाये जाते हैं। उनके बालोंको हमारे देशमें सुरागायके बाल कहते हैं।

तिब्बतके लोग यागका दूध भी दूहकर पीते हैं। यह दूध भैंसके दूधकी तरह होता है किन्तु जबतक यागके बच्चेको उसके पास न लाया जाय तबतक उसकी मा दूध नहीं दूहने देती। दूध दूहनेके समय वह अपने बच्चेको गायकी तरह चाटती जाती है।

तिब्बतके किसी किसी भागमें जङ्गली घोड़े भी पाये जाते हैं। उनके झुण्डके झुण्ड जङ्गलोंमें विचरते देख पड़ते

हैं। ये घोड़े बहुत भड़कीले होते हैं और यदि इनको जरा भी खटका होता है तो ये दम छोड़कर कई कई दिनों तक भागते चले जाते हैं और फिर जहांसे भागते हैं वहां एक एक और दो दो वर्षतक नहीं आते । इन घोड़ोंका रङ्ग लाल और भूरा होता है और इनकी पूंछ काले रङ्गकी होती है।

तिब्बती घोड़ोंकी गर्दनके बाल जमीनतक लटकते रहते हैं। उनका शिकार करना कठिन कार्य है । प्रायः लोग उनको पालते और उनसे सवारीका काम लेते हैं। पहाड़ी टट्टू बहुत मजबूत और सीधा होता है और पहाड़ी टीलों अथवा चोटियों पर बकरीकी तरह चढ़ जाता है। इन टट्टुओं पर बोझ लादा जाता है और टट्टूवाला टट्टूकी पूंछसे लटका हुआ चलता है। कभी कभी दो आदमी भी पूंछके सहारेसे चले जाते हैं।

तिबतके भिन्न भिन्न स्थानोंमें जङ्गली गधा भी पाया जाता है। वह डीलडौल और आकार प्रकारमें खच्चरके समान होता है। उसके शरीरके ऊपरी भागके बालोंका रङ्ग हलका रहता है किन्तु निचले हिस्सेका सफेद होता है। ये गधे दस दस और पन्द्रह पन्द्रहका झुण्ड बाँधे तिबतके जङ्गलोंमें फिरते देख पड़ते हैं। किन्तु बहुतसी गदहियोंके साथ केवल एक गधा रहता है । इस गधेसे उन गदहियोंके जो बच्चे-

पैदा होते हैं वे भी अपने पिताके समान बलवान् दीर्घ-जीवी और कद्दावर होते हैं। पुराने गधोंके साथ पचास पचास गदहियां तक रहती हैं; किन्तु नये गधेके साथ केवल पांच या दस गदहियोंका झुण्ड रहता है। जब कोई गधा अपने दलके पास किसी दूसरे गधेको आते देखता है तो दौड़कर उससे लड़ने और दाँतोंसे काट तथा लातोंसे मारकर उसे वहांसे भगा देनेका उद्योग करने लगता है।

इन गधोंमें प्रायः सितम्बरके महीनेमें लड़ाई हो जाया करती है। यदि किसी जङ्गली गधेको किसी प्रकारका भय हो जाता है तो वह पूंछ और कान उठाकर भागना आरम्भ करता है और भागनेके समय एक गधेके पीछे दूसरा और उसके बाद तीसरा—इसी प्रकार गधोंकी पंक्ति बराबर भागती हुई चली जाती है। फिर कई सौ मीलतक भागते हुए चले जानेके बाद किसी जगह सब गधे खड़े होते और कई मिनिट तक भयचकित दृष्टिसे अपने चारों ओर देखते रहते हैं। उस समय नर गधा आगे बढ़कर अपने साथियों से भयका कारण पूछता है। यदि शिकारी उनके पीछे ही लगा चला जाता है तो वे फिर भागना आरम्भ करते हैं; किन्तु इस बार बहुत दूर जाकर रुकते हैं। इन गधोंका रेंकना कटु और कर्कश होता है और ये थोड़ी थोड़ी दूर पर हाँक निकालते जाते हैं।

एक और जानवर जङ्गली भेड़ है जिसे तिब्बती भाषामें 'अरगाली' कहते हैं। यह जानवर बछड़ेके समान होता है और इसके पैर लम्बे होते हैं। इसके सींग प्रायः चार फीट लम्बे और भूरे रङ्गके होते हैं किन्तु इसके शरीरका रङ्ग कुछ पीला होता है। यह जानवर छलांग मारनेमें बड़ा प्रवीण होता है । यहांतक कि बीससे तीस फीट तककी दूरी एकही छलांगमें तै कर सकता है।

'अरगाली' भेड़ अकेली नहीं किन्तु झुण्ड बांधकर रहती हैं। पांचसे लेकर पन्द्रह भेड़तक एक झुण्डमें होती हैं पर कभी कभी एकही दलमें पचीस पचीस और तीस तीस भेड़ें भी देखी गई हैं। इनके साथ प्रायः एक या दो और कभी कभी तीन नर होते हैं, जिनमें एक पथदर्शक बनता है बाकी सब भेड़ें उसी पथदर्शकके अवलम्बन किये हुए मार्गपर चलती हैं। वह उनकी रक्षा करता है और भयप्रद स्थानोंसे निकालकर उन जगहोंमें ले जाता है जहां शान्ति रहती है । जब बच्चे जननेकी ऋतु आती है तो नरोंमें खूब लड़ाई होती है। यहांतक कि लड़ते लड़ते उनके सींग गिर पड़ते हैं जिन्हें पीछे लोमड़ियां उठा ले जाती हैं।

इन भेड़ोंकी दुम चक्कीके पाटकी तरह चौड़ी होती है। इनसे सवारीका काम लिया जाता है और इनकी पीठ-

पर नमक भी लादकर ले जाया जाता है। हरएक भेड़ पचीस पौण्ड तक नमक ले जाती है। वह अपने पालने वालेको सीटी पर लगी होती है, जिसके बजातेही वह तुरन्त मालिकके पास आ जाती है। यदि कोई भेड़ झुण्डसे निकलकर कहीं चली जाती है तो उसे पलुए कुत्ते ढूंढ़ लाते हैं। तिब्बतकी भेड़ोंके बाल लंबे होते हैं और उनसे कपड़ा बनाया जाता है। ये बाल अधिकतासे विदेशमें भेजे जाते हैं।

तिब्बतके निवासी।

तिब्बतवासी भी चीनवासियोंकी भांति मङ्गोलियन हैं। उनका आकार प्रकार इस तरहका होता है—

उनके गालोंकी हड्डियां उभरी हुई होती हैं। नाक चौड़ी और चिपटी होती है। उनकी भौंहें अधिक घनी होती हैं, किन्तु पलकें मालूम नहीं पड़तीं। उनका मुंह भी चौड़ा होता है। उनके कान बड़े बड़े और मोटे होते हैं। उँगलियां गोल और छोटी होती हैं। स्त्रियोंकी लम्बाई अधिकसे अधिक पांच फीट होती है और पुरुषोंकी पांच फीट चार इञ्च।

पुरुषोंका पहनावा एक ढीला ढाला लम्बा कुर्ता रहता है। कमरके ऊपर वे पेटी कस लेते हैं। पायजामा और कुर्ता भी पहना जाता है। वे प्रायः पैरोंमें ऊनी पट्टियां भी

बाँध लेते हैं। कमरबन्दमें बहुत सी आवश्यक चीजें रखी जाती हैं। जैसे बटुआ, चाकू, तम्बाकूकी थैली, एक छोटा हुक्का इत्यादि। स्त्रियोंकी तरह पुरुष भी चोटीके ढङ्ग पर अपने बालोंको गूँथ लेते हैं। सिर पर टोपी भी पहनी जाती है।

औरतें एक लम्बा कुर्ता और उसके ऊपर एक छोटी सी कुर्ती या जाकेट पहनती हैं जिसकी आस्तीनें लम्बी होती हैं। वे चुस्त पायजामा भी पहनती है जिसमें चुनट अधिक होती है। पीठ पर एक खाल जिसमें लम्बे लम्बे बाल लगी रहती हैं ओढ़ी जाती है।

तिबतकी औरतें गहने भी पहनती हैं और वे महीनेमें केवल एकबार अपने बालोंको सँवारती हैं। उनकी चोटीसे चमड़ा बँधा रहता है जिससे चाँदीके घुंघरू लटकते रहते हैं। इस चमड़ेको वे आगेकी तरफ उलट देती हैं जिससे वे चाँदीके घुंघरू सिरके आगे आ जाते हैं। इसका एक सिरा पीठकी ओर भी रहता है।

तिबतकी प्रत्येक युवती इस गहनेको बढ़ियासे बढ़िया बनाकर पहननेकी चेष्टा करती है। इसके सिवा हाथोंमें कङ्गन, बाजूबन्द (जो पीतल या चाँदीका होताहै) और कमरमें भी बहुतसी चीजें पहनी जाती हैं।

तिबतके लोग मैले बहुत हैं। साल भरमें एकबार स्नान करते हैं! और सिवा त्योहारोंके कपड़े नहीं बदलते।

यहांतक कि उनके शरीरके कपड़े आपही सड़ या गलकर गिरने लगते हैं। किन्तु इतने गन्दे होनेपर भी वे बड़े हृष्ट-पुष्ट और सुफेद होते हैं। उनकी औरतें भी इतनी मजबूत होती हैं कि तीस तीस सेर बोझ लिये हुए पहाड़ी दर्रोंमें चढ़ती चली जाती हैं। उनकी उमर अधिक होती है। उनकी बोली बड़ी कड़वी और भारी होती है और हँसी बड़ी तेज।

तिब्बतका वह भाग जिसे छोटा तिब्बत कहते हैं काश्मीर के * नीचे स्थित है। वहांके लोगों का पहनावा और उनका आकार प्रकार तिब्बतके निवासियोंके सदृश नहीं है। वहां की औरतें बाल गूँधकर चोटीकी लटकायें रहती हैं। जाड़े के दिनमें शरीर गर्म्म रखनेके लिये तिब्बतके लोग भारी कपड़े पहनते हैं।

तिब्बतके मकान।

तिब्बतके मकान तिमञ्जिले होते हैं। उनका निचला खण्ड पत्थरका होता है; किन्तु ऊपरके दोनों खण्ड ईंटके होते हैं। उनमें टहलनेके लिये बरामदे भी बने रहते हैं।

* काश्मीरका हाल 'काश्मीर वर्णन' नामक पुस्तकमें मिलेगा जिसे हम फिर किसी समय लिखनेकी चेष्टा करेंगे।

(गं० प्र० गुप्त)

बरामदोंमें खिड़कियां भी रहती हैं । जाड़ेके दिनोंमें तिब्बतवाले उनमें बैठकर धूप खाते हैं ।

मकानोंकी कोठरियां बड़ी होती हैं; कमरे भी लम्बे चौड़े होते हैं। उनपर लकड़ीकी छत डाली जाती है और जमीनमें गारेसे सफेद पत्थरके टुकड़े जमाये जाते हैं। उसके ऊपर एक कोठरी बनाकर उसमें बुद्धकी मूर्त्ति स्थापित की जाती है। उस मूर्त्तिका आकार पूरे आदमीकासा होता है और वह ऐसी सफाईसे बनाई जाती है कि उसे देखकर उसके असली होनेका धोखा होता है । बुद्धदेवकी ध्यान-मग्न मूर्त्तिके आसपास और भी कई मूर्त्तियां रहती हैं ।

मूर्त्तियोंके सामने एक चबूतरे या टेबुल पर सात प्रदीप बलते रहते हैं । इसके सिवा वहां छोटी छोटी बीस कटोरियां भी रखी रहती हैं जिनमें चावल आदि चीजें पड़ी रहती हैं ।

इन कोठरियोंमें उक्त देवताओंके लिये बेलन भी रहते हैं जिनको दो या तीन आदमी मिलकर घुमाते हैं । यहां कई पहिये भी रखे रहते हैं जो पूजनके समय फिराये जाते हैं । इनके अतिरिक्त उस समय ढोल तुरही आदि कई प्रकारके बाजोंका भी शब्द किया जाता है । तिब्बतमें बुद्ध-धर्म्म घर घर फैला हुआ है ।

तिब्बतवालोंके यहां नित्यके व्यवहारकी चीजोंमें निम्न-लिखित वस्तुएँ हैं । यथा, भोजन बनानेके बर्त्तन, दूध गर्म्म

करनेको लकड़ीको हाँडी, कई सन्दूक, जौ भुननेके लिये लम्बे लम्बे सीखचे, और चर्खे इत्यादि ।

उनके घरोंमें बैठने उठनेका एक बड़ा कमरा रहता है। इस कमरेसे सटे हुए और दो कमरे होते हैं। एक कोठेका दूसरा असबाब रखनेका। इस कमरेके ऊपर मुलाकाती कमरा होता है। उसमें कई खम्भे भी लगे होते हैं।

जाड़ेके दिनोंमें तिब्बतवाले मकानके निचले भागमें रहते हैं और अपने पलुए जानवरोंके निकटही सोते हैं। छत पर छप्परोंके नीचे सोते हैं। गरीबों और किसानोंके मकान भी इसी तरहके बनाये जाते हैं। परन्तु उनकी छत आदि कच्चो होती है।

नित्यके व्यवहारकी वस्तुओंमें ये चीजें भी शामिल हैं;– जैसे पत्थरकी प्यालियां, चमचे, रकाबियां, मिट्टीके वर्त्तन, बकरी और भेड़ोंके बालके गद्दे इत्यादि। तिब्बतवाले भी अपने कपड़ोंको ढकनेदार सन्दूकोंमें रखते हैं।

तिब्बत-वासियोंकी खुराक ।

तिब्बतके लोग अधिक भोजन करते हैं। चाहे वे कितनेही सवेरे घरसे निकलें पर भोजन करके निकलते हैं और जहां कहीं रास्तमें थोड़ी देरके लिये ठहरते हैं वहीं जौका भुना हुआ आटा निकाल कर फाँकने लगते हैं–और यदि उनको पानी मिल जाता है तो वे उस आटेको गूंद-

कर उसके बड़े बड़े गोले बना लेते हैं और बड़े चावसे उसे खाते हैं।

जब तिबतवाले कहींका सफर करते हैं और तीन बजेके लगभग कहीं जाकर ठहरते हैं तो उनकी स्त्रियां झटपट रोटी और शोरवा बनाने लग जाती हैं। शोरवा चायका बनाया जाता है और उसमें नमक आटा मक्खन और कभी कभी मांसादि भी डाला जाता है। खाने पीनेके बाद बाकी दिन नाच आदिमें व्यतीत होता है। प्रायः बहुत राततक हाहा होहो हुआ करती है।

जो लोग धनवान् हैं वे इन चीजोंको खाते हैं; जैसे मेवे, दूध, दही, पनीर, खट्टी मलाई, मटर, सेम, जौके आटेकी गोलियां और कई प्रकारकी गन्दी चीजें जिनको कोई हिन्दुस्थानी या योरोपियन छूनेमें भी घृणा करेगा। खाने पीनेके बाद चाय और जौकी शराब पी जाती है। इस शराबको तिब्बती भाषामें 'चाङ्ग' कहते हैं। तिबतका मक्खन सड़ा हुआ और दुर्गन्धियुक्त होता है। उसे वे बकरों और भेड़ोंकी खालमें रखके और भी खराब कर डालते हैं। वहां का मक्खन जितनाही पुराना हो उतनाही उसका मूल्य अधिक होता है। तिबतवासी चालीस पचास और साठ वर्षतकका पुराना मक्खन खाते हैं। किन्तु ऐसा मक्खन या तो किसी त्योहारको या बड़े भारी उत्सवके दिन खाया जाता है।

तिब्बतमें चायका व्यापार अधिकतासे होता है। चाय वहांके व्यापारका एक प्रधान अंग समझी जाती है। वह चीनसे जाती है। तिब्बतवाले दिनमें तीन बार (सुबह दोपहर और शामको) चाय अवश्य पीते हैं। यदि उन्हें चाय नहीं मिलती तो वे बेचैन और सुस्त रहते हैं। चाय लकड़ीकी हँाड़ीमें रखी जाती है और जब वह खौलाई जाती है तो छानकर हँाड़ीमें भर दी जाती है। खौलानेके उपरान्त उसमें थोड़ासा नमक डालकर कोई बीस बार चलाया जाता है। इसके बाद उसमें मक्खन भी मिलाया जाता है। इस चायमें न तो मक्खनका स्वाद आता है न नमकका; पर तिब्बतवाले प्रायः ऐसीही चाय पीते हैं। जिन लोगोंको चाय नहीं मिलती वे किसी वृक्ष विशेषकी छालको उबाल कर पीते हैं।

चाय लकड़ीके प्यालोंमें पी जाती है। इन प्यालोंके ऊपर सुन्दर रङ्ग चढ़ा रहता है और कभी कभी जवाहरात भी जड़े रहते हैं। प्यालोंमें चाय भरके उसे एक या दो मिनटके लिये रख दिया जाता है। जब चायके ऊपर मक्खनकी चिकनाई तैरने लगती है तब वह दूसरे प्यालेमें उलट कर फेंटी जाती है। सर्कारकी ओरसे प्रान्तीय अधिकारियोंके पास चाय बराबर भेजी जाती है और उन्हें उसके बेचनेकी ताकीद की जाती है। इसके सिवा धन-

वान् गृहस्थोंके यहां भी गवर्नमेण्टकी ओरसे चाय भेजी जाती हैं; चाहे उनको उसकी आवश्यकता हो या न हो किन्तु धनहीन लोगोंके लिये यह नियम नहीं है ।

भलेजणकी थालियां टीनकी होती हैं और उनमें अनेक प्रकारकी नक्काशी और तस्वीरें बनी रहती हैं । नेपोलियन तृतीय, प्रिंस आफ वेल्स और मिष्टर मेगडाष्टन्को तिब्बतवाले बुद्धका अवतार समझते हैं । थालियोंके चारों ओर अंग्रेजीके छब्बीसों अक्षर खुदे रहते हैं ।

तिब्बत-वासियोंका उद्यम ।

तिब्बत पहाड़ी देश है, अतएव वहां खेती करने योग्य भूमि कम है । केवल घाटियां इस योग्य हैं; जहां चावल और गेहूं उत्पन्न होता है किन्तु वह भी अधिक नहीं । हां जौ अधिकतासे उत्पन्न होता है जिसे छोटी जातिके लोग खूब खाते हैं । जब फसलके कटनेका समय आता है तब बाल काटकर देवताओंको चढ़ाई और मकानके खम्भोंके साथ बाँधी जाती है ।

जिस समय अनाज काटा जाता है उस समय किसान लोग एक प्रकारका गीत गाते हैं जिसका आशय यह होता है कि "अन्न अधिक उत्पन्न हो ताकि हमलोग उसे याचकों और लामाओंको दे सकें ।"

फसल कट जाने पर अनाजको साफ करके उसका ढेर लगाया जाता है । अन्नके ढेरोंपर बोरे रखे जाते और

पवित्र झण्डियां गाड़ी जाती हैं। सायङ्कालमें उन ढेरोंके निकट एक भोज दिया जाता है।

सूर्य्यास्तके बाद अँधियारी फैलनेसे पहले सब अन्न बोरोंमें भरा जाता है। उस समय भी एक लामाके सामने गीत गाया जाता है। जब अधिक रात हो जाती है और ठण्डक पड़ने लगती है तब खेतिहर लोग अनाजको खेत से उठा ले जाते हैं। जो लामा वहां उपस्थित रहता है उसे जौकी शराब पिलाई जाती है, अच्छी अच्छी चीजें खानेको दी जाती हैं और अन्यान्य रीतियोंसे उसका सत्कार किया जाता है।

दिहातके लोगोंका निर्वाह उनकी भेड़ बकरी आदिके झुण्डोंसे होता है। नगरोंमें रहनेवाले लोग हर तरहका व्यापार करते हैं और घोड़ों, बैल, खच्चर तथा भेड़ोंपर व्यापारकी वस्तुएँ लादकर बेचनेके लिये ले जाते हैं। इनमेंसे कुछ लोग भारतवर्षमें भी आते हैं, कुछ चीनको जाते हैं और कुछ तिबतहीमें व्यापार करते हैं।

शादी व्याह।

जिस रीति नीति और जिस रङ्ग ढङ्गसे तिबतमें विवाहादि उत्सव होते हैं वे बड़ेही विचित्र और विस्मयकर हैं। वहां ऐसे बहुत कम लोग हैं जो एकही स्त्रीके साथ विवाह करके सन्तोष लाभ करते हों। वहांका प्रत्येक पुरुष कई

कई स्त्रियां रखता है और साथही वहां यह रीति भी है कि एकही स्त्रीके अनेक पति भी होते हैं ! यह प्रथा सम्पूर्ण सम्पूर्ण तिबतमें प्रचलित है।

तिबतमें विवाह छोटी अवस्थामेंही कर दिया जाता है किन्तु विवाह होनेके बाद बहुत दिनोंतक पति पत्नी दोनोंही अपने अपने पिताके घरमें रहते हैं। जिस पुरुष का पिता उसके विवाहका कोई प्रबन्ध नहीं करता वह स्वयं अपने लिये स्त्री खोज लेता है और जिस (स्त्री) के साथ विवाह करनेकी उसकी इच्छा होती है उसके पिताके निकट थोड़ीसी जौकी शराब ले जाता है और आप भी उसके साथ बैठकर पीता है । इसके थोड़ेही दिनके बाद वह लड़कीके पिताके पास फिर मदिरा लेकर जाता है। इसके बाद जब वह तीसरी बार लड़कीके घर जाता है और लड़कीके पिताको भी विवाह स्वीकार होता है तब लड़कीसे उसकी मुलाकात कराई जाती है । इसके उपरान्त विवाह हो जाता है। तिबतके कुछ भागोंके लोग मदिराके अतिरिक्त रुपये तथा अन्यान्य बहुमूल्य वस्तुएँ भी लड़कीके पिताको भेटमें देनेके लिये ले जाते हैं।

ज्येष्ठ पुत्र और उसके भाइयोंका विवाह एकही स्त्रीसे कर दिया जाता है । तिबतमें यह प्रथा प्रचलित है कि जब लोग वृद्ध हो जाते हैं तब वे गृहस्थी छोड़कर किसी

एकान्त स्थानमें वास करते हैं। उनके बाद सबसे बड़ा लड़का घरका मालिक और प्रधान समझा जाता है।

बड़े लड़केको सब बच्चे "बड़ा बाप" कहते हैं और उसके छोटे भाइयोंको "छोटा बाप।" स्त्री भी अपने पतियोंको इन्हीं नामोंसे पुकारती है। वहांकी स्त्रियोंको अपने लिये कई पति होनेका बड़ा गर्व रहता है। वे कहती हैं कि यदि पति एकही हो तो उसकी मृत्यु होनेके साथही स्त्री विधवा हो जाती है, किन्तु यदि वह कई पुरुषोंकी पत्नी हो तो कभी विधवा नहीं होने पाती। इस प्रकार कुलटा नायिकाकी तरह तिब्बतकी स्त्रियां 'सदा सुहागिन' बनी रहती हैं।

जब नई दुलहिन घरमें आती है तब सारे गाँव या मुहल्लेके स्त्री पुरुष उसके निकट एकत्र होते हैं और भेटमें उसे कुछ रुपये देते हैं। इन रुपयोंसे दुलहिन अपने लिये गहने बनवाती है बल्कि एक खेत खरीद लेती है जिसका सम्पूर्ण अधिकार उसीको रहता है; ताकि जब किसी कारण पति उसे छोड़ दे या तिलाक दे दे तब वह दरिद्रिणी या एकबारही निस्सहाया न हो जाय।

इस प्रथाका यह परिणाम हुआ है कि तिब्बतमें स्त्रियां अधिकतासे वर्त्तमान हैं किन्तु उन्हें पति नहीं मिलता। ऐसी अवस्थामें बहुतेरी स्त्रियां मन्दिरों और देवालयोंमें

रहती हैं और धर्म्म पुस्तकोंकी नकल करके या धार्म्मिक कामोंमें योग देकर पेटपालन करती हैं ।

जब किसी घरानेमें सन्तानके कारण झगड़ा होता है तब जिस व्यक्ति या पतिका चेहरा लड़केसे मिलता है वही व्यक्ति उस लड़केका पिता समझा जाता है ।

सबसे प्रथम पतिके अधिकार भी औरोंकी अपेक्षा बड़े होते हैं और जबतक वह घरमें रहता है तबतक उस के दूसरे भाई घरमें (या स्त्रीके पास) नहीं जाते । जब पहला पति मर जाता है तब दूसरे पति उसका अधिकार पानेके लिये परस्पर झगड़ा करते हैं । स्त्री जबतक जीवित रहती है, तबतक सब पतियोंके माल असबाबके काममें लानेका उसे अधिकार रहता है । किन्तु इन सब रीतियों के होते भी एकही व्यक्ति पतियोंकी कई झगड़ोंमें मिलकर कई स्त्रियोंका स्वामी बन सकता है ।

अन्त्येष्ठि क्रियादि ।

असभ्य जङ्गली जातियोंमें मृतकोंका संस्कार करनेकी सबसे उत्तम रीति यह है कि वे लाशको जंगलमें फेंक देते हैं, जहां वह सड़ जाती है या उसे वनपशु खा जाते हैं, सुसभ्य पारसियोंमें भी यही प्रथा प्रचलित है । उनके यहां एक मीनार बनाई जाती है; वहीं लाश रख दी जाती है और गिद्ध कौव्वे उसे खा जाते हैं !

तिब्बत वासियोंमें मुर्दोंका संस्कार करनेकी इससे भी बुरी और घृणित रीति है। गरीब लोग मुर्देकी लाशको रस्सियोंसे बाँधकर उसे घरकी भीतरी दीवारके सहारे खड़ा कर देते हैं जहां वह (लाश) दो तीन दिनतक खड़ी रहती है किन्तु धनवान् लोग उसे इसी तरह चौदह पन्द्रह दिनतक रखे रहते हैं। रस्सियोंसे लाश इस कारण बाँधी जाती है कि कहीं वह उठ न खड़ी हो और घर वालोंको दुःख न दे। इसके उपरान्त पुजारी बुलाये जाते हैं जो कुछ मन्त्रादि पढ़कर फूंकते हैं।

जब पुजारी मन्त्र पढ़ लेते हैं तब लाश यातो कुत्तोंके आगे डाल दी जाती है या पक्षियोंके सामने। कुछ स्थानों में मीनारोंपर लाश रखी जाती है। वहांसे कुत्ते उसे घसीट कर खा जाते हैं। ल्हासा नगरमें मनुष्यभक्षक कुत्ते अधिकतासे पाये जाते है। वहांके कई देवालयोंमें इसी कार्यके निमित्त कुत्ते पाले जाते हैं। इन कुत्तोंको धनवान् लोग अपने मुर्दोंको लाश खिलाते हैं। जहां मीनार नहीं है वहांवाले लाशके टुकड़े टुकड़े करके उन टुकड़ोंको कुत्तोंको खिला देते हैं। तिब्बतके किसी किसी भागमें लोग मुर्देको पहाड़की चोटीपर छोड़ आते हैं या नदियोंमें बहा देते हैं।

किन्तु प्रसिद्ध पुरुषों और पुजारियोंकी लाशें जलाई जाती हैं। ये लोग मुर्देका एक सुगन्धियुक्त लकड़ीकी शय्यामें

रख देते हैं और पुजारीका उत्तराधिकारी उसमें आग देता है। उसके चारों ओर ईंटोंकी एक मेड़ बनाई जाती है। उस समय अनेक कार्य्य किये जाते हैं। ढोल बजता रहता है और लामागण एकस्वरमें गीत गाते या मन्त्रोच्चारण करते रहते हैं। जो लोग उस समय वहां उपस्थित रहते हैं उनपर पवित्र जल छिड़का जाता है। प्रायः मुर्देकी राख मिट्टीके किसी बर्त्तनमें बन्द करके रख ली जाती है।

कुछ स्थानोंमें मुर्देके जलाने या फेंकनेके बाद लामा मकानकी छतपर एक सप्ताह तक बैठा रहता है और पवित्र जल पढ़ पढ़कर वहां छिड़कता जाता है। सातवें दिन बहुतसे लामा एकत्र होकर नाचते गाते तथा मृतककी आत्माकी शान्तिके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करते हैं।

उस समय धार्म्मिक पुस्तकका एक एक पन्ना हर एक लामाके हाथमें दे दिया जाता है जो बहुत शीघ्र उसे पढ़कर समाप्त कर देते हैं। इसके पश्चात् एक घण्टा बड़े जोरसे बजाया जाता है और सब लोग भोजनादि करने लग जाते हैं।

यदि मृत मनुष्य धनाढ्य या प्रतिष्ठित होता है तो एक वर्षके अनन्तर उसके लिये बरसी की जाती है। आये हुए लोगोंमेंसे साधारण जन तो पंक्तिबद्ध होकर बैठते हैं, किन्तु लामागण एक गोल घेरा बनाकर बैठते और

भोजन करते हैं। भोजनके उपरान्त सब लोग खूब मद्यपान करते हैं।

लदाखमें मृतकोंको प्रायः इस तरह जलाते हैं,—"जब कोई साधारण मनुष्य मरता है तब दस पन्द्रह लामा—और यदि धनाढ्य या प्रतिष्ठित व्यक्तिकी मृत्यु होती है तब बहुतसे लामा इकट्ठे होते हैं। सबसे प्रथम बड़ा लामा ईश्वरकी प्रार्थना करता है और उस कपड़ेको जो सिरके पीछे बँधा रहता है उठा लेता है। इसके बाद यह समझकर कि शायद आत्मा शरीरसे अभी बाहर नहीं हुई है वह मृत पुरुष या स्त्रीकी छातीमें एकबार खञ्जर चुभोता है। इसके उपरान्त जो कपड़ा मुर्देके शरीरपर रहता है वह उतार दिया जाता है। फिर बड़े बड़े ढोल बजते हैं और मुर्देको एक सफेद कपड़ेसे ढाँक दिया जाता है। फिर मुर्देके निकटस्थ सम्बन्धी सात बार उसको फेरी देते हैं। इसके उपरान्त स्त्रियां अपने घरोंको लौट जाती हैं और बड़ा लामा फिर प्रार्थना करने लगता है। मुर्देके सब सम्बन्धी भी उस समय वहांसे चले जाते हैं और जिस देवताका मृतक पूजक रहता है उसी देवताके उपासक लाशको मरघटमें ले जाते हैं। सबसे बड़ा लामा आगे आगे चलता है; बाकी लोग हाथोंमें झण्डियां लिये उसके पीछे पीछे जाते हैं। उनके बाद लोहार ढोल बजाता चलता है और जो लोग रथीके साथ रहते हैं उनके हाथोंमें

लकड़ियां रहती हैं जिनको मक्खन मलकर वे एक जगह रख देते हैं । लाश सफेद मक्खनमें लपेटकर चिता पर रखी जाती है और आग लगा दी जाती है। उतनी देरतक लामालोग कर्कश स्वरमें गीत गाते रहते हैं और लोहार ढोल बजाता रहता है। जब मुर्दा जलकर राख बन जाता है तब सबसे पहले लामा लोग यह कहकर कि "अब हमसे तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं रहा" वहांसे जल्दी जल्दी चले आते हैं। लामाओंके पीछे लुहार रहता है और सब के पीछे बाकी लोग।

दूसरे दिन प्रातःकालमें एक व्यक्ति जो उसी कार्यके लिये नियुक्त रहता है यह देखने जाता है कि मुर्देकी राखपर किस जानवरके पांवोंका चिन्ह है। इस जाँचसे यह निश्चय किया जाता है कि जिसके पांवोंका चिन्ह उस राख के ढेरपर रहेगा उसी वंशमें वह मनुष्य दूसरी बार जन्म ग्रहण करेगा।

मृतककी कुछ राख देवालयमें पहुंचाई जाती है। उस में कुछ गीली मिट्टी मिलाकर, बड़ा लामा उसपर बुद्धकी मूर्त्तिका ठप्पा लगा देता है। फिर उस मूर्त्तिको या तो स्मारकभवनमें रखा जाता है या मृतककी सबसे निकटस्थ सम्बन्धीके घरमें।

मुर्देके जल जानेके बाद उसके मित्र और सम्बन्धी बहुतसी मदिरा उसके घरवालोंको भेंट करते। उस मदि-

राका मूल्य एक पुस्तकमें लिखा जाता है; ताकि यदि देने-वालोंके घरमें कभी कोई मरे तो उतनीही शराब उसके यहां भी भेजी जाय। मुर्दा जलानेके चार दिनके बाद लामा एक कागज पर उसका नाम लिखता है और कुछ मन्त्र पढ़कर अन्तमें उसे जला देता है ताकि यदि अभीतक उसकी आत्माने शान्ति न धारण की हो तो अब कर ले।

इसके उपरान्त भी और कई कार्य किये जाते हैं। मकानकी खुली छतपर खानेकी चीजें रखा जाती हैं; जिसमें मृतकको मालूम हो कि अब भी उसके सम्बन्धी उसकी सहायतासे विमुख नहीं हैं। उसके मित्र और रिश्तेदार कुछ दिनोंतक उसका शोक मनाते हैं, बाल सँवराना छोड़ देते हैं और कम बोलते हैं। मुर्देके शरीरके कपड़े गहनों और कफनको लामा लोग नीलाम करा लेते हैं।

तिब्बतकी भाषा।

एक प्रसिद्ध तिब्बती यात्री लिखता है कि तिब्बतकी भाषा चार तरहके अक्षरोंसे लिखी जाती है। वे अक्षर हिन्दुस्थानी अक्षरोंके ढङ्गके हैं; किन्तु उनका उच्चारण यहांके शब्दोंके उच्चारणसे नहीं मिलता।

चार प्रकारके अक्षरोंमेंसे बड़े अक्षर तो धर्मसम्बन्धी पुस्तकें लिखनेके समय काममें लाये जाते हैं दूसरी तरहके अक्षर व्यापार सम्बन्धी बातोंके लिखनेमें व्यवहृत होते हैं,

तीसरी तरहके साधारण पुस्तकोंमें और चौथी तरहकी अन्य कामोंमें प्रचलित हैं ।

तिब्बती भाषामें शब्दका प्रत्येक भाग पृथक् पृथक् लिखा जाता है और पदविभागके लिये छोटी डांड़ियां खेंची जाती हैं । ग्राम देशमें एकही बोली प्रचलित है । तिब्बती बोलीमें संस्कृतकी अधिक मिलावट है ।

तिब्बतमें भूतपूजन ।

संसार भरके देशोंके असभ्य और जङ्गली लोग भूत पिशाचका पूजन करते हैं । भूतपूजन करनेवालोंका विश्वास है कि सब स्थानोंमें भूत पिशाच फैले हुए हैं और वे साधारण मनुष्योंको कष्ट पहुंचानेके लिये अवसर देखा करते हैं । इन भूतोंको धार्म्मिक जन अथवा पुजारी मंत्रके द्वारा भगा देते या अपने वशमें कर सकते हैं । उनको इस बातका भी विश्वास है कि पुजारी लोग मन्त्र यन्त्रोंके द्वारा तूफान रोक सकते हैं, बीमारी दूर कर सकते हैं और अनेक विपत्ति बाधाओंको टाल सकते हैं ।

भूतविश्वासी लोग ऐसा समझते है कि पिशाच और चुड़ैल वृक्षोंपर रहती हैं । उनका ऐसा समझना इस कारण से है कि उनकी समझमें भूत पिशाचोंको भी मनुष्योंकी भांति सरदी गर्मी धूप और वृष्टिसे बचनेकी चिन्ता रहती है; इसीसे वे वृक्षोंकी छायामें निवास करते हैं । उनका

ऐसा भी विश्वास है कि कोई कोई भूत तो सुनसान स्थानों में रहते हैं, कोई वृक्षोंकी छायामें, कोई मकानमें और कोई अपने ऊपर विश्वास रखनेवाले मनुष्योंके शरीरमें निवास करते हैं।

बहुतसे पिशाच उन मृत मनुष्योंकी आत्माएँ समझी जाती हैं जिनकी मृत्यु किसी आकस्मिक घटनासे अथवा भूतभयके कारण हो जाती है। उन आत्माओंसे लोग डरते हैं और उनको प्रसन्न रखनेके लिये गाते बजाते तथा मेवा मिठाई चढ़ाते हैं।

जादू टोना।

प्रत्येक मठ और मन्दिरमें एक जादूगर रहता है जिससे हर बातमें सलाह ली जाती है और जिसकी आज्ञाके अनुसार सब काम किये जाते हैं। बड़े जादूगर अत्याचारी भूतों और पिशाचोंके अवतार समझे जाते हैं। तिब्बतकी गवर्नमेण्टकी ओरसे भी राज्यरक्षाके लिये एक जादूगर नियुक्त रहता है; जिससे, रोग, शोक, दुःख और युद्धादिके फैलनेके विषयमें सम्मति ली जाति है। सर्कारी जादूगरसे और लोग भी उसकी फीस देकर सलाह ले सकते हैं। उसकी फीस नजरानेको छोड़ ढ़ाईसौ (२५०) रुपये तक होती है।

जो लोग सर्कारी जादूगरसे कुछ पूछना चाहते हैं वे एक प्रार्थनापत्र लिखकर उसके निकट भेजते हैं। जब उस के पास बहुतसे पत्र इकट्ठे हो जाते हैं तब वह सबको इकट्ठा करके अनेक प्रकारसे अपने शरीरको ऐंठता, लोगों की बातोंका उत्तर देता और चावल फेंकता जाता है। प्रश्नोंके उत्तरोंको लेखकगण बराबर लिखते जाते हैं। प्रश्नों के भले अथवा बुरे फलोंको कहकर वह प्रश्नकर्त्ताको अनेक उपाय भी बतलाता है।

साधारण जादूगर जिनकी कोई गिनती नहीं प्रायः उजड्ड और असभ्य हैं। ये सब सीधेसादे कपड़े पहनते हैं और विवाह भी करते हैं। इनकी टोपी गावदुम तथा ऊँची होती है।

जादूगरोंके पास लकड़ी अथवा और किसी वस्तुकी तलवार रहती है जिसके द्वारा वे भूतोंको अपने वशमें करते हैं। इनके पास तीर कमान भी होते हैं। ये लोग मनुष्यकी हड्डियां जिनपर भूतोंकी मूर्त्तियां बनी रहती हैं और अन्यान्य कई तरहकी चीजें पहने रहते हैं।

मंत्र यंत्र।

तिब्बतमें मन्त्र यन्त्रका बहुत प्रचार है। शत्रुओंको नीचा दिखाने, ग्रहदशाको शान्ति करने, भूत पिशाचोंसे बचने, प्रसन्नता पाने आदिके लिये तिब्बतमें मन्त्र यन्त्रका प्रयोग

किया जाता है। ये मन्त्र यन्त्र श्लोकोंकी भांति हैं और नीचे लिखे अनुसार प्रयुक्त किये जाते हैं।

रोगोंकी शान्तिके लिये कागजके टुकड़ों पर यन्त्र लिख-कर खाये जाते हैं। इसके सिवा प्रत्येक व्यक्ति गलेमें डोरेके साथ यन्त्र बाँधे रहता है। कोई कोई लोग यन्त्रोंको डोरेमें न बाँधकर पीतल चाँदी और सोनेमें मढ़कर पहनते हैं और कभी कभी उनमें पुखराज भी जड़वा लेते हैं।

बड़े बड़े यन्त्रोंको कमरके साथ बाँधा जाता है और छोटे यन्त्रोंको सिरके बालमें रखा जाता है। मकानोंकी कड़ियोंमें भी कभी कभी यन्त्रादि बाँधे जाते हैं। चारपायोंके लिये एक भिन्न प्रकारका मन्त्र पढ़ा जाता है।

तिबतमें गोली बन्दूक तलवार आदि शस्त्रों तथा हिं-सक जन्तुओंसे बचनेके लिये भी यन्त्र प्रयुक्त होते हैं। तिबत के कुत्ते यदि रातको खुल जाते हैं तो वे मनुष्योंको फाड़ खाते हैं, उनसे बचनेके लिये भी यन्त्र पहने जाते हैं। गधों से रक्षा पानेके लिये भी जो झुण्डके झुण्ड घूमते फिरते हैं यन्त्र मन्त्रोंकी जरूरत पड़ती है।

शत्रुको कष्ट पहुंचानेके लिये उसकी एक मूर्त्ति बना कर उसमें एक सूई चुभोई जाती है और समझा जाता है कि ज्यों ज्यों सुई अधिकाधिक चुभती जायगी त्यों त्यों शत्रुको क्रमशः अधिक कष्ट पहुंचता जायगा।

"खूशूग" की बातें।

भूत-पिशाचोंको भगानेके लिये अनेक प्रकारके उपाय किये जाते हैं। रातके समय देवालयोंके आँगनमें लामा लोग खूब रोशनी करते हैं। देवालयके अन्यान्य भागों तथा छतोंमें भी लाल लालटेनें लटकाई जाती हैं। उस समय झुण्डकी झुण्ड लामा छतोंपर बैठकर मन्त्रोच्चारण करते हैं। रात्रि-प्रार्थनाका आविष्कार इसलिये किया गया कि रात्रिके समय प्रेतात्माएँ नगरोंपर आक्रमण न कर सकें; क्योंकि लोग ऐसा समझते थे कि रातमें आकर प्रेतात्माओं ने हमारे पलुए पशुओंको बीमार कर दिया है। गौओंका दूध बिगाड़ दिया है, हमारे पूजनादिमें विघ्न और बाधा डाली है, इत्यादि। सो तिबतवासियोंका यह विश्वास है कि रात्रि-प्रार्थनासे प्रेतात्माएँ नहीं आतीं और यदि आती भी हैं तो किसी प्रकारकी हानि नहीं करने पातीं।

तिबतमें एक विशेष प्रकारके पुजारी होते हैं, जिनका नाम "खूशूग" है। मिष्टर वाडेलने जिन्होंने एकबार तिबत की यात्रा की थी "क्वार्टरली रिवियू" नामक अंग्रेजी पत्रमें "खूशूग" का वृत्तान्त यों लिखा है—

"जब मैं यात्रा करता हुआ 'यू' इलाक के पहुँचा, तब मैंने वहां एक खुशूग देखा जिसके विषयमें लोगोंका विश्वास था, कि वह उन्हें दीर्घजीवी बना सकता है और प्रता-

मात्रोंकी दुराचारसे उनकी रचा कर सकता है। उस (खु-ग्रूग्) के पास बालक वृद्ध युवक स्त्री पुरुष सभी आते थे। उसके पास एक किताब भी थी जिसे पढ़कर वह लोगोंको सुनाता था, उनपर पवित्र जल छिड़कता था और उनके हाथ यन्त्रादि लिखकर बेचता था; जिनके खाने और बाँधने से लोग प्रेतादिकी छाया पड़नेसे बच सकते थे। उस 'खु-ग्रूग' ने उस गांवके लोगोंसे दोही चार दिनमें भेड़ बक-रियों और मक्खनको छोड़ दो तीन सौ नकद सिक्के भी ऐंठ लिये।"

यह यात्री इसी प्रकारको एक और घटनाका उल्लेख करता है कि जब वह वहांसे चलकर एक दूसरे गांवमें पहुँचा जहांके लोगोंको अनेक प्रकारके रोगोंने सता रखा था, तब उसने वहां भी कुछ लामाओंके बीच एक 'खुग्रूग' को बैठे देखा। थोड़ी देरके बाद उस खुग्रूगके पास एक बीमार लड़की लाई गई जिसके सिर पर लोग कहते थे कि भूत सवार है। खुग्रूगने उस लड़कीके ऊपर से भूतको अपने शरीरमें लानेके लिये अनेक प्रकारसे अ-पने शरीरको ऐंठा और बहुतसी अस्पष्ट बातें कहीं। इसके उपरान्त लड़कीकी गर्दनमें एक लात मारकर उसने कहा "जाओ इसे ले जाओ अब यह अच्छी हो जायगी।" गांव-वाले यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और उस लड़कीको वहां से उठा ले गये पर वह जीवित न रही दूसरेही दिन मर गई।

धार्म्मिक स्वांग ।

एक और प्रकारसे भूत प्रेतको शान्ति होती है । इस में पवित्र पुजारियों और प्रेतात्माओंको लड़ाईकी नकल की जाती है । एक यात्री इसके विषयमें यों लिखता है कि "एक मन्दिरमें रातको बहुतसे आदमी इकट्ठे होते हैं । जिस समय उन आदमियोंको सङ्केत किया जाता है उस समय वे आठ आठ दश दश फीट लम्बी तुरहियां, बांसुलियां और ढोल आदि बजाने तथा चीखके चिल्लाने लगते हैं । ये सब बातें मानो प्रेतात्माओंको युद्धके हेतु प्रस्तुत करनेके लिये की जाती हैं ।

"जब बाजे बजने लगते हैं, तब मनुष्योंके झुण्डके झुण्ड बाहर निकलते हैं । वे अपने मुखपर बनावटी तथा डरावने "चेहरे" लगाये रहते हैं । उनमेंसे कोई तो काठके तम्बूरे, कोई झाँझ, कोई खरताल और कोई घण्टे बजाते हैं । साथही वे नाचते, उछलते, कूदते तथा गाते भी जाते हैं । उनके शरीर पर एक पतली लँगोटीके अतिरिक्त और कोई वस्त्र नहीं रहता ।

"फिर दोनों पक्षोंमें थोड़ी हाहा हीही और कोलाहल किया जाता है । अन्तमें पवित्र लोग (बनावटी) प्रेतात्माओं को मारकर भगा देते हैं; पर वे (नकली) आत्माएँ फिर उठती और आक्रमण करती हैं लेकिन अन्तमें पराजित होती हैं ।"

लामाओंका धर्म्म।

'लामा' शब्द तिब्बती भाषाका है। उसका हिन्दी अनुवाद 'गुरु' हुआ। सबसे बड़े लामा (गुरु) को 'दलाई लामा' कहते हैं; जिसका मतलब समुद्र लामा या श्रेष्ठ गुरु हुआ; क्योंकि तिब्बतवासियोंका ऐसा विश्वास है कि दलाई लामा विद्या बुद्धि और वैभवमें समुद्रके समान गहरा होता है। लामाओंका धर्म्म जादूगरी भूतपूजन और बौद्धधर्म्मको खिचड़ी समझना चाहिये। दलाई लामाको लोग बुद्धका अवतार समझते हैं। उसके बाद निशाई लामाका दर्जा है। वह भी बुद्धका अवतार समझा जाता है और उसी प्रकार तिब्बतके लोग वहांके प्रत्येक लामाको बुद्धका अवतार मानते हैं।

तिब्बतियोंका यह विश्वास है कि बौद्धधर्म्मको तिब्बतमें वहांके एक राजाने फैलाया। यह राजा सन् ६१७ ई० में पैदा हुआ और ६९८ ई० में मरा। इसके बाद (तिब्बतके) कुछ राजाओंने तो बौद्धधर्म्मको बहुत माना; किन्तु कुछने तिब्बतसे उसको जड़को एकबारही उखाड़कर फेंक देनेकी चेष्टा की। एकने बौद्धमन्दिरोंको गिराने और धर्म्मसम्बन्धी पुस्तकोंके जला देनेकी भी आज्ञा दी थी; किन्तु लोग उससे इतने अप्रसन्न हुए कि उन्होंने उसे मार ही डाला। यह सन् ९०० ई० की घटनाका जिक्र है। इस राजाका पुत्र

अथवा उत्तराधिकारी भी धर्म्मच्युत था; किन्तु इसके पोतेने कई नवीन मन्दिर बनवाये और टूटे फूटे देवालयोंका फिरसे संस्कार कराया । एक समय तिब्बतके एक अधिकारीने अपने मन्त्रीको १६ आदमियोंके सहित भारतवर्षमें यह कहकर भेजा कि वे बौद्धधर्म्मकी पुस्तकें ले आवें और साथ ही उस लिपिको भी सीखते आवें जो उस समय भारतवर्षमें प्रचलित हो । इसी राजाके समयमें बौद्धधर्म्मकी पुस्तकों का तिब्बतकी भाषामें अनुवाद हुआ ।

इस राजाको तिब्बतमें बौद्धधर्म्मका प्रचार करनेमें अपनी दो रानियोंसे विशेष सहायता मिली; क्योंकि वे दोनों भी इस धर्म्मको बहुत मानती थीं । उनमेंसे एक तो नेपालकी रहनेवाली थी दूसरी चीनकी राजकुमारी थी । ये रानियां भी अपने साथ बौद्धधर्म्मकी बहुतसी पुस्तकें तथा गौतमबुद्ध की अनेक मूर्त्तियां अपने साथ तिब्बतमें लाई थीं । ये बड़ी दयावती और दान देनेवाली थीं; इसलिये इनके समय में अन्यान्य देशोंसे बौद्धधर्म्मके बहुतसे प्रचारक तिब्बतमें आ गये थे ।

पूर्व्वीय एशियाका रहनेवाला एक व्यक्ति एक हजार आज्ञाकारी सैनिकोंके साथ तिब्बतपर चढ़ाई करके विजयी हुआ था । इसका जन्म सन् १२५९ ई० में हुआ था और मृत्यु १२९४ ई०में । यह भी बौद्धधर्म्मका अनुयायी था । इसने तिब्बतके सबसे बड़े मठके ज्येष्ठ लामाकी बहुतसे

अधिकार प्रदान किये थे और उसे तिब्बतका स्वामी बनाकर उससे कर लेना आरम्भ किया था ।

दलाई लामाका चुनाव ।

जितने दलाई लामा होते हैं सब बुद्धके अवतार समझे जाते हैं और उसी प्रकार तिशाई लामा भी । लोगोंका विश्वास है कि लामा लोग एक शरीरको छोड़नेके नौ महीने बाद—और कभी तीसरे वर्ष फिर जन्म लेते हैं ।

लोग कहते हैं कि प्राचीन समयमें लामागण भविष्यद्वाणी कह दिया करते थे । वे कहते थे कि अमुक वंशमें हम फिर जन्म लेंगे; किन्तु आजकल यह प्रथा प्रचलित है कि जब दलाई लामाका देहान्त होता है तब देश भर के बच्चोंके नामोंकी तालिका बड़े मठमें भेज दी जाती है और चीनका राजप्रतिनिधि जिसे 'अम्बान' कहते हैं दलाई लामाके चुनावके लिये बुलाया जाता है । उन नामोंमेंसे जिनकी सूची मठमें आती है तीन नाम चुने जाते हैं ।

उन तीनों बच्चोंके नाम कागजके टुकड़ों पर लिखकर एक सोनहले घड़ेमें डाले जाते हैं जिसके चारोंओर बौद्ध-धर्मके अनुयायी और लामा छः दिनतक बैठे रहते हैं । वे लोग निर्दिष्ट समयोंके अतिरिक्त बीचमें कुछ खाते पीते नहीं—और ईश्वरकी वन्दना करते रहते हैं । तीसरे दिन सबसे बड़ा पुजारी उस घड़ेमें हाथ डालकर कागजका एक

टुकड़ा निकाल लेता है। उस कागजपर जिस लड़केका नाम लिखा रहता है उसीको दलाई लामा नियुक्त होनेकी सूचना सबको दे दी जाती है। इन सब कार्य्योंके सम्पन्न होनेके समय सहकारी लामा और चीनी राजप्रतिनिधि (अम्बान) उसी जगह उपस्थित रहते हैं।

लामा लोग प्रधान प्रधान लक्षणोंके द्वारा अपने पुनर्जन्म को प्रमाणित करते हैं। जो लड़का दलाई लामाके पदपर नियुक्त किया जाता है उसे हजारों आदमियोंके सामने अपने दलाई लामा होनेका प्रमाण देना पड़ता है। इसके उपरान्त उसे उसको गद्दीपर बिठाया जाता है।

उसकी परीक्षा इस प्रकार की जाती है कि बहुतसी पुस्तकें कपड़े और बर्त्तन आदि जिनको मृत लामा अपने काममें ला चुका रहता है मठोंसे लाये जाते हैं और अनेक चीजें मिलाकर नये चुने हुए लामाके आगे रखी जाती हैं, जो उनमेंसे असली चीज पहचानकर अलग कर देता है। यदि यह भी नहीं तो उससे उसके पूर्वजन्मकी बातें पूछी जाती हैं। यदि वह इन परीक्षाओंमें उत्तीर्ण होता है तो उसे दलाई लामाकी गद्दीपर बैठने और शासनकार्य्य करनेका अधिकार दिया जाता है। इस अवसर पर बड़ा भारी आनन्दोत्सव मनाया जाता है।

सबसे पहले दलाई लामाका देहान्त सन् १४७० ई०के लगभग हुआ था। मृत्युके दस महीने बाद उसने दूसरी

बार जन्म ग्रहण किया था । फिर तीसरी बार वह सन् १५४३ ई०में पैदा हुआ ।

पहले दलाई लामा अपनी वृद्धावस्था तक अपने पदपर आरूढ़ रहते थे और जबतक १८ वर्षके नहीं होते थे तबतक कोई दूसरा आदमी उनके कार्य्योंको सम्पन्न करता था; किन्तु अब कोई भी १८ वर्षसे अधिक उमरतक दलाई लामा नहीं रह सकता । इस अवस्थाके बीचहीमें मर जाता है या मार डाला जाता है ।

दलाई लामाके साथ मुलाकात ।

केवल एक योरोपियनको दलाई लामाके दर्शनोंका सौभाग्य प्राप्त हुआ था । उसका नाम टामस मैनिङ्ग था । वह दलाईलामाके दरबारमें १७ दिसम्बर १८११ ई० को गया था । वह उस मुलाकातका हाल यों लिखता है,—

"हम सवारीमें बैठे उस पहाड़को उपत्यकामें जा पहुंचे जिसके शिखर पर दलाई लामाका भवन बना हुआ है । कुछ ऊपर चढ़कर एक चबूतरेपर पहुंच गये; जहां हमको सवारीसे उतरना पड़ा । इस चबूतरेसे लेकर उस कमरेतक जहां दलाईलामा लोगोंसे मुलाकात करता है चक्करदार सीढ़ियां लगी हुई हैं । इन सीढ़ियोंकी संख्या ४००के लगभग है । इनमेंसे कुछ तो पत्थरकी हैं, जो पहाड़

में बैठा दी गई हैं, बाकी काठकी हैं। इनपरसे होते हुए हमलोग एक खंडसे दूसरे खण्डपर जा पहुंचे।

"अन्तमें हम उस चबूतरेपर पहुंचगये जिसपर वह कमरा बना हुआ है जिसमें दलाईलामा लोगोंसे मिला करता है। कमरेके बाहर हमको कुछ देर तक ठहरना पड़ा। इस अवसरमें हम उस लामासे जो यहांतक हमारे साथ आया था बातें करते रहे।

"उस कमरेमें दलाईलामाके पास कोई और महाशय बैठे हुए थे और थोड़ी देरके बाद जब अन्दर जानेकी अनुमति मिली तब वहां जाकर हम जिस एंचपेचमें पड़ गये उसका वर्णन करना कठिन है। हमको इनलोगोंसे मिलनेकी रीति नीति नहीं मालूम थी इसीसे ऐसी गड़बड़ उपस्थित हुई। अस्तु टोपी उतार और झुक कर हमने दलाई लामा को प्रणाम किया। लामाने इसके उत्तरमें" हमारे सिरपर हाथ फेर दिया। फिर हम लोग लामाके पासही एक दूसरी चौकी पर जो राज-सिंहासनसे कुछ नीची थी बिठाये गये। इसके उपरान्त चाय मंगाई गई। वह बड़ी स्वादिष्ट थी और हमने सब पी जानेकी इच्छा की। परन्तु हमें खबर भी नहीं होने पाई थी कि प्यालियां वहांसे उठा ली गईं।

"लामाकी सुन्दर आकृति और रंग ढंगने हमारे चित्त को एकबारही अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। हम एक दृष्टिसे उसीकी ओर देखने लगे। उस समय उसकी अवस्था

कोई सप्त वर्षका होगा, परन्तु उसके मुखसे ऐसी सरलता प्रकट होती थी जैसी किसी वयस्थ और पढ़े लिखे योग्य पुरुषमें कठिनतासे देख पड़ती है। वह सर्वदा प्रसन्न वदन रहता है। हमारी ओर देखकर वह कभी कभी हँस देता था। हमारी दाढ़ी उसे आश्चर्य्यमें डालती थी। अन्तमें उसने हमसे पूछा कि रास्तेमें हमको किसीने दिक तो नहीं किया या हमें किसी तरहको कठिनाईका सामना तो नहीं करना पड़ा? उसकी बातोंका हमने तुरन्त उचित शब्दोंमें उत्तर दिया। इसके अनन्तर हमारे आगे फूलोंकी एक टोकरी रखी गई और फिर सभा भङ्ग हुई। विसर्जित भी वहांसे उठकर बाहर चले आये।"

बाबू शरच्चन्द्रदास जिन्होंने १८८२ ई० में तिबतकी यात्रा की थी अपने दलाईलामाके साथ मुलाकात करनेका वृत्तान्त यों लिखते हैं;-

"हम लोगोंको कम्बलों पर बिठाया गया था जिनकी आठ पंक्तियां बिछी हुई थीं। मैं तीसरी पंक्तिमें था और लामाके सिंहासनसे कोई दस फीटके अन्तर पर। दरबार भवनमें सन्नाटा छाया हुआ था। लामाके दरबारी तथा राज्यके कार्य्यकर्त्तागण बड़े गम्भीर भावसे इधर उधर टहल रहे थे।

"जब दलाई लामा आकर अपने सिंहासन पर विराजमान हुआ तब सब कर्म्मचारी उसकी सेवा शुश्रूषा करने

लगी । चायकी किश्तियां लाई गईं और सब लोगों पर विशेष रोब छा गया ।

"लामाके सिंहासनके नीचे लकड़ीके नक्काशीदार खम्भे लगे हुए थे और उसपर रेशमी तकिया और गिलाफ पड़ा हुआ था । दलाई लामा जिस समय सिंहासन पर आकर बैठा उस समय वह पीले रङ्गका वस्त्र पहने हुए था । उसके सिरपर एक ऊंची टोपी थी और वह पालथी मारे बैठा था । सिंहासन पर बैठतेही दोनों हाथ उठाकर उसने हम लोगोंको बारी बारीसे आशीर्वाद किया । जब मेरी बारी आई तब उसने बड़ी गहरी दृष्टिसे मेरी ओर देखा । मैंने इच्छा की कि कुछ मिनटोंतक उसके निकट खड़ा रहूं, किन्तु इस बातकी अनुमति मुझे नहीं दी गई बल्कि मैं धीरेसे पीछे हटा दिया गया ।

"लामाका रंग कुछ लालीपन लिये हुए खुला हुआ था । उसके गाल गुलाबी थे । आंखें बड़ी बड़ी थीं । [illegible] उसका दुबला पतला था और आकृतिसे वह हिन्दू [illegible] पड़ता था ।

"जब आशीर्वादादि हो चुका और सब लोग यथास्थान बैठ गये तब चायकी किश्तियां उठाई गईं । दलाई लामाके वास्ते जो किश्ती थी वह जड़ाऊ थी और उसमें जड़ाऊ प्यालियां रखी थीं । इससे पूर्व कि दलाई लामा चायके

प्यालेसे मुँह लगाता, एक गीत बहुत ऊंचे स्वरोंमें गाया गया। इसके उपरान्त सब लोग अपने अपने आगेकी रखी चाय चुपचाप पी गये। वह बड़ी स्वादिष्ट थी। इसके अनन्तर एक सर्दारने लामाके आगे एक थाली लाकर रखा जिसमें चावल भरे थे। लामा महाशयने उसे केवल छू दिया; जिसके बाद चावल लोगोंको बांट दिये गये। मुझे भी एक मुट्ठी मिले। मैंने उनको रूमालमें बांध लिया। फिर दलाई लामाने एक सुन्दर पद गाकर सबका आशीर्वाद किया। सब लोग उठ खड़े हुए और दरबार मण्डप थोड़ीही देरमें जनशून्य हो गया।

आठ [illegible]

लार [illegible] १..६।